



# National Journal of Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177

NJHSR 2026; 1(65): 46-49

© 2026 NJHSR

www.sanskritarticle.com

## डॉ. पुष्पेन्द्र जोशी

सहायकाचार्य, वेदविभाग,  
महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक-  
एवं वैदिक विश्वविद्यालय,  
उज्जैन (म.प्र.)

## Correspondence:

### डॉ. पुष्पेन्द्र जोशी

सहायकाचार्य, वेदविभाग,  
महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक-  
एवं वैदिक विश्वविद्यालय,  
उज्जैन (म.प्र.)

## वैदिककालीन अर्चना-परम्परा एवं वास्तु-विज्ञान

### डॉ. पुष्पेन्द्र जोशी

#### सारांश -

वैदिक सभ्यता में अर्चना-परम्परा और वास्तु-विज्ञान परस्पर पूरक तत्त्व हैं। वैदिक युग में उपासना का मुख्य आधार यज्ञ, मंत्र-पाठ और देव-आवाहन था, जबकि स्थायी देवालयों की अवधारणा उत्तरवैदिक काल में विकसित हुई। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद में वर्णित यज्ञीय विधानों के साथ-साथ वेदी-निर्माण की सूक्ष्म ज्यामिति वास्तु-विज्ञान के प्रारम्भिक रूप को प्रकट करती है। आगे चलकर शतपथ ब्राह्मण तथा तैत्तिरीय संहिता में वेदियों की रचना, मण्डल-विन्यास और दिशानुशासन का विस्तृत विवेचन मिलता है। यह शोध-पत्र वैदिक अर्चना की प्रकृति, यज्ञीय परम्परा, वेदी-विन्यास तथा उनसे विकसित वास्तु-तत्त्वों का अकादमिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। वैदिक सभ्यता में धर्म और स्थापत्य का सम्बन्ध अत्यन्त घनिष्ठ था। प्रारम्भिक वैदिक समाज में देवताओं की उपासना प्राकृतिक शक्तियों के रूप में की जाती थी। स्थायी देवालयों की अपेक्षा यज्ञीय वेदियाँ ही उपासना के केन्द्र थे।

**मुख्य शब्द :-** वैदिक अर्चना, यज्ञ, वेदी-विन्यास, वास्तु-विज्ञान, शुल्बसूत्र, देवालय-विकास।

#### 1. वास्तु-शब्द की व्युत्पत्ति -

वास्तु शब्द संस्कृत धातु √वस् (निवासे) से निष्पन्न है। “वस्” धातु का अर्थ है — रहना, निवास करना।

#### 1. धातु एवं प्रत्यय-निर्माण

मूल धातु: वस् (निवासे) — धातुपाठ

उणादि/कृत् प्रत्यय: तु

रूप-निर्माण:

वस् + तु → वास्तु

यहाँ ‘वस्’ धातु में गुण-वृद्धि के परिणामस्वरूप ‘आ’ दीर्घ हो जाता है (वस् → वास), और ‘तु’ प्रत्यय के योग से “वास्तु” रूप बनता है।

#### 2. व्युत्पत्तिगत अर्थ

वास्तु = यत्र वसति इति

अर्थात् — जहाँ निवास किया जाए, वह स्थान, भवन, या निवास-योग्य भूमि।

#### 3. शास्त्रीय सन्दर्भ

अमरकोश में —

“वास्तु गेहे भूमि च”

अर्थात् वास्तु शब्द का अर्थ गृह तथा भूमि दोनों है।

वृहत्संहिता तथा मयमतम् में “वास्तु” शब्द का प्रयोग भवन-निर्माण और स्थल-विन्यास के अर्थ में हुआ है।

#### 4. व्याकरणिक विश्लेषण

“वस्” धातु से ‘क्त’ प्रत्यय लगाने पर “वस्त” (वसित) रूप आता है।  
 “वास्तव्य” (निवास योग्य) शब्द भी इसी धातु से बना है।  
 “वसति” (वह रहता है) — धातु का लट् लकार रूप।

## 5. अर्थ-विस्तार

कालान्तर में “वास्तु” का अर्थ केवल निवास-स्थान न रहकर—  
 भूमि-विन्यास  
 स्थापत्य-विद्या  
 भवन-निर्माण शास्त्र  
 तक विस्तृत हो गया, जिससे “वास्तुशास्त्र” शब्द प्रचलित हुआ।

## 2. प्रस्तावना-

वैदिक संस्कृति भारतीय अध्यात्म और स्थापत्य की आधारभूमि है। प्रारम्भिक वैदिक समाज में उपासना का केन्द्र प्राकृतिक शक्तियाँ थीं—अग्नि, इन्द्र, वरुण, मित्र आदि। इन देवताओं की अर्चना मुख्यतः यज्ञ-रूप में होती थी। उस समय स्थायी मंदिरों का प्रचलन नहीं था; बल्कि यज्ञशालाएँ और वेदियाँ अस्थायी या अर्ध-स्थायी संरचनाएँ थीं।

वास्तु-विज्ञान का मूल तत्त्व “ऋत” और “सामंजस्य” की अवधारणा से जुड़ा है। ब्रह्माण्डीय व्यवस्था को प्रत्यक्ष करने हेतु वेदी का विन्यास किया जाता था। इस प्रकार वैदिक अर्चना केवल धार्मिक क्रिया न होकर ब्रह्माण्डीय सिद्धान्तों का स्थापत्य-रूपांतरण थी।

## 3. शोध के उद्देश्य व उपयोगिता

1. वैदिक अर्चना-परम्परा के मूल स्वरूप का विश्लेषण करना।
2. यज्ञीय वेदी-विन्यास में निहित वास्तु-तत्त्वों का अध्ययन करना।
3. शुल्बसूत्रों में वर्णित ज्यामिति और मापन-पद्धति का मूल्यांकन करना।
4. वैदिक परम्परा से उत्तरकालीन मंदिर स्थापत्य के विकास का सम्बन्ध स्पष्ट करना।

## 4. वैदिक अर्चना-परम्परा : स्वरूप एवं आधार

### 4.1 देवता और यज्ञीय उपासना

ऋग्वेद में अग्नि को “ऋत्विज्” और “होता” कहा गया है—  
 “अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।” (ऋग्वेद 1.1.1)  
 अग्नि देवताओं तक हवि पहुँचाने वाले माध्यम हैं। अतः वैदिक अर्चना का मूल केन्द्र अग्नि-स्थापन है।  
 यजुर्वेद में यज्ञीय अनुष्ठानों की क्रियात्मक विधियाँ मिलती हैं। सामवेद में मंत्रों का गान और अथर्ववेद में शान्ति, पुष्टि एवं गृह-संबंधी अनुष्ठानों का वर्णन है।

### 4.2 अर्चना के प्रकार

1. श्रौतयज्ञ – अग्निष्टोम, ज्योतिष्टोम आदि।
2. गृह्ययज्ञ – संस्कारात्मक गृहस्थों के अनुष्ठान।
3. पञ्चमहायज्ञ – ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, भूतयज्ञ, मनुष्ययज्ञ।

इन अनुष्ठानों में वेदी का निर्माण, दिशाओं का निर्धारण और मंत्रोच्चार अनिवार्य था।

## 5. वेदी-विन्यास एवं ज्यामिति

वैदिक कालीन वास्तु का सर्वप्रमुख उदाहरण यज्ञ-वेदी है। शतपथ ब्राह्मण में गरुडाकार, चक्राकार एवं चतुष्कोणीय वेदियों का वर्णन मिलता है।

शुल्बसूत्रों—विशेषतः बौधायन शुल्बसूत्र—में वेदी-निर्माण की गणितीय विधियाँ वर्णित हैं। बौधायन ने पाइथागोरस प्रमेय के समकक्ष सूत्र दिया—

“दीर्घचतुरश्रस्याक्षया रज्जुः पार्श्वमानी तिर्यग्मानी च।”

यह दर्शाता है कि वैदिक वास्तु में ज्यामिति का उच्च विकास था।

## 6. दिशानुशासन एवं ब्रह्माण्डीय प्रतीक

वास्तु-विज्ञान का मूल सिद्धान्त दिशाओं की पवित्रता है। पूर्व दिशा सूर्य और ज्ञान का प्रतीक है; अतः यज्ञशाला का मुख्य द्वार प्रायः पूर्वाभिमुख होता था।

तैत्तिरीय संहिता में वेदी-निर्माण में पृथ्वी, अन्तरिक्ष और द्युलोक का त्रिस्तरीय प्रतीकात्मक विन्यास बताया गया है। वेदी ब्रह्माण्ड का सूक्ष्म रूप अध्यात्मिक प्रणाली मानी जाती थी।

## 7. उत्तरवैदिक विकास : देवालय की अवधारणा

वैदिक युग में स्थायी देवालयों का अभाव था, किन्तु उत्तरवैदिक और पुराणकाल में मूर्ति-स्थापना और मंदिर-निर्माण की परम्परा विकसित हुई। मत्स्य पुराण तथा अग्नि पुराण में देवालय-निर्माण की विधियाँ मिलती हैं।

वास्तुशास्त्र के ग्रंथों—जैसे मयमतम् और विश्वकर्मा वास्तुशास्त्र—में मण्डल-विन्यास, आयाम, प्रतिमा-स्थापन प्रतिमा उत्थापन शिखर स्थापना तथा प्रासादनिर्माण आदि का विस्तृत वर्णन है।

## 8. वास्तुमण्डल की अवधारणा-

वास्तुपुरुष मण्डल में चतुषष्टि या एकाशीति खण्डों का वर्ग-विन्यास किया जाता है। यह ब्रह्माण्डीय ऊर्जा के संतुलन का प्रतीक है। प्रत्येक खण्ड में देवताओं का आधिपत्य माना गया है। यह मण्डल वेदियों के वर्गाकार विन्यास से विकसित हुआ प्रतीत होता है। वैदिक वेदी के मापन, अनुपात और विन्यास ने बाद के मंदिर स्थापत्य को आधार प्रदान किया।

## 9. वैदिक अर्चना : तात्त्विक और सामाजिक आधार

### 9.1 यज्ञ और ऋत की अवधारणा-

वैदिक दर्शन में “ऋत” ब्रह्माण्डीय व्यवस्था का सिद्धान्त है। यज्ञ को ऋत की पुनर्स्थापना का साधन माना गया। Ananda K. Coomaraswamy के अनुसार, वैदिक यज्ञ प्रतीकात्मक रूप से सृष्टि की पुनर्रचना है—अर्थात् प्रत्येक यज्ञ ब्रह्माण्डीय सृजन का पुनरावर्तन है।

## 9.2 सामाजिक संरचना में यज्ञ

राजसूय, अश्वमेध और वाजपेय जैसे यज्ञ राजनीतिक वैधता के साधन थे। पांडुरंग वामन काणे ने दर्शाया है कि यज्ञीय विधान केवल आध्यात्मिक न होकर सामाजिक-संरचनात्मक तत्त्व भी थे।

## 10. अर्चना और वास्तु का दार्शनिक समन्वय-

वैदिक दर्शन में “यज्ञ” को सृष्टि का मूल सिद्धान्त कहा गया है। पुरुषसूक्त में विराट पुरुष के यज्ञ से सृष्टि की उत्पत्ति वर्णित है। यह अवधारणा स्थापत्य में भी परिलक्षित होती है—मंदिर को ‘देह’ और गर्भगृह को ‘हृदय’ माना गया। अतः अर्चना-परम्परा केवल क्रिया नहीं, बल्कि खगोलीय ऊर्जा का स्थापत्यात्मक रूपांतरण है।

वैदिककालीन अर्चना-परम्परा भारतीय धार्मिक जीवन की मूलाधार रही है, जिसमें यज्ञ के माध्यम से देवशक्तियों की उपासना की जाती थी। यज्ञ केवल अनुष्ठानिक क्रिया नहीं, बल्कि ब्रह्माण्डीय व्यवस्था (ऋत) की पुनर्स्थापना का प्रतीक था। यज्ञीय वेदियों का निर्माण विशिष्ट ज्यामितीय सिद्धान्तों, मापन-पद्धतियों और दिशानुशासन के अनुसार किया जाता था, जो वास्तु-विज्ञान की प्रारम्भिक संरचना को प्रकट करते हैं। ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा शतपथ ब्राह्मण में वर्णित वेदी-विन्यास इस स्थापत्य-चिन्तन के प्रमाण हैं।

आधुनिक विद्वानों—जैसे पांडुरंग वामन काणे, A. L. Basham, Stella Kramrisch तथा Ananda K. Coomaraswamy—ने वैदिक यज्ञ, धर्मशास्त्र और मंदिर स्थापत्य के विकास पर गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया है। यह शोध-प्रबंध परम्परागत शास्त्रीय स्रोतों तथा आधुनिक आलोचनात्मक दृष्टिकोणों के समन्वय से वैदिक अर्चना और वास्तु-विज्ञान के अन्तर्सम्बन्ध का विवेचन करता है।

## 11. वेदों में वास्तु सम्बंधी सूक्त

विशेषतः अथर्ववेद में गृह, भूमि और वास्तु-शांति संबंधी सूक्त मिलते हैं। नीचे प्रमुख मंत्र अर्थ सहित प्रस्तुत हैं—

### 1. भूमि सूक्त (भू-संरचना और निवास)

स्रोत : अथर्ववेद 12.1 (भूमि सूक्त)

“माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।” (अथर्ववेद 12.1.12)

अर्थ : पृथ्वी मेरी माता है और मैं पृथ्वी का पुत्र हूँ।

वास्तु-संदर्भ : यह मंत्र भूमि के प्रति श्रद्धा और पवित्रता को दर्शाता है। भवन-निर्माण से पूर्व भूमि-पूजन की परम्परा इसी भाव से जुड़ी है।

### 2. वास्तोष्पति सूक्त

स्रोत : ऋग्वेद 7.54

“वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान् स्वावेशो अनमीवो भवा नः।”

(ऋग्वेद 7.54.1)

अर्थ : हे वास्तोष्पति (गृह के अधिष्ठाता देवता)! हमें पहचानो, हमारे लिए मंगलमय और रोग-रहित निवास प्रदान करो।

वास्तु-संदर्भ : “वास्तोष्पति” गृह-देवता माने गए हैं। यह मंत्र गृह-प्रवेश एवं वास्तु-शांति के अवसर पर आज भी प्रयुक्त होता है।

## 3. शांति और स्थिरता मंत्र

स्रोत : यजुर्वेद (तैत्तिरीय संहिता संदर्भ)

“शं नो मित्रः शं वरुणः...”

अर्थ : मित्र, वरुण आदि देवता हमारे लिए कल्याणकारी हों।

वास्तु-संदर्भ : यह मंत्र दिशाओं और देवशक्तियों के संतुलन की कामना करता है, जो वास्तु के मूल सिद्धान्त—सामंजस्य—से सम्बद्ध है।

## 4. गृह-सुरक्षा मंत्र

स्रोत : अथर्ववेद 3.12 (गृह-संबंधी सूक्त)

“इहैव स्तं मा विचलिष्टं विश्वमायुर्व्यश्रुतम्।”

अर्थ : तुम (गृहवासी) यहीं स्थिर रहो, विचलित न हो, और पूर्ण आयु को प्राप्त करो।

वास्तु-संदर्भ : गृह की स्थिरता, सुरक्षा और आयु-समृद्धि की कामना।

## वैदिक वास्तु-दृष्टि का सार -

भूमि को माता मानकर पूजन। गृह-देवता (वास्तोष्पति) की आराधना। दिशाओं और देवताओं का संतुलन। निवास-स्थान को आध्यात्मिक ऊर्जा का केंद्र मानना। वेदों में वास्तुशास्त्र आधुनिक अर्थ में तकनीकी स्थापत्य-ग्रंथ के रूप में नहीं मिलता, परंतु भूमि, गृह, दिशाओं और निवास-शांति से संबंधित अनेक मंत्र उपलब्ध हैं। विशेष रूप से ऋग्वेद और अथर्ववेद में वास्तु-संबंधी आध्यात्मिक दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से मिलता है।

## 12. सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रभाव -

1. सामूहिकता - यज्ञ सामाजिक एकता का माध्यम था। यज्ञों में सभी वर्णों का समावेश कर विश्वकल्याण की भावना प्रवाहित करना मुख्य उद्देश्य है।
2. शिक्षा एवं गणित-विकास - शुल्बसूत्रों से गणितीय ज्ञान विकसित कर वैदिक गणित के माध्यम से कठिन से कठिन गणित के सूत्रोंको साधारण तरीके से समाज के बीच में उद्घाटित किया गया।
3. पर्यावरण-संरक्षण - प्राकृतिक शक्तियों की उपासना से प्रकृति के प्रति श्रद्धा बढ़ी। यज्ञों के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण प्रकृति का संरक्षण कर सभी प्राणियों के हित की बात की जाती है।
4. कला-विकास - उत्तरकालीन मंदिर स्थापत्य की प्रेरणा भारत में मंदिरों, मठों, आश्रमों में अनेक प्रकार की वास्तु परिकल्पक कलाओं का अनोखा प्रदर्शन कर वास्तु व मूर्तिकला का समावेश किया गया है जो की अपने आप में ऐतिहासिक प्रदर्शित होता है।

### 13. ब्रह्माण्डीय प्रतीकवाद और वास्तु -

#### 13.1 वेदी : पुरुष का प्रतीक

शतपथ ब्राह्मण में वेदी को पुरुष का प्रतीक माना गया है। वेदी का प्रत्येक भाग ब्रह्माण्ड के किसी तत्त्व का प्रतिनिधित्व करता है।

#### 13.2 मंदिर स्थापत्य की ओर आकर्षण

Stella Kramrisch ने The Hindu Temple में प्रतिपादित किया है कि हिंदू मंदिर वैदिक वेदी का विकसित रूप है। उनके अनुसार, गर्भगृह वेदी का आध्यात्मिक उत्तराधिकार है। Ananda K. Coomaraswamy ने भी मंदिर को "स्थायी यज्ञ" की संज्ञा दी है।

#### 14. विश्लेषणात्मक विमर्श -

1. दार्शनिक आधार - यज्ञ को सृष्टि का प्रतीक माना गया।
2. वैज्ञानिक दृष्टि - वेदी-निर्माण में गणितीय शुद्धता।
3. सांस्कृतिक प्रभाव - मंदिर स्थापत्य का विकास।
4. समाज-संरचना - यज्ञ सामाजिक समन्वय का माध्यम।

#### 15. आलोचनात्मक परिप्रेक्ष्य -

आधुनिक इतिहासकारों का मत है कि वैदिक युग में स्थायी मंदिरों का अभाव था और मूर्तिपूजा का विकास उत्तरकाल में हुआ। A. L. Basham इस तथ्य को रेखांकित करते हैं कि वैदिक धर्म अधिक अनुष्ठान-प्रधान था, जबकि भक्ति और मूर्तिपूजा का विकास बाद में हुआ। इसके विपरीत, पारंपरिक मत यह मानता है कि मंदिर-स्थापत्य वैदिक वेदी का स्वाभाविक विकास है। Stella Kramrisch इस निरन्तरता को स्थापत्य-रूप में स्पष्ट करती हैं। इस प्रकार आधुनिक विमर्श में दो दृष्टिकोण स्पष्ट हैं—

1. ऐतिहासिक-आलोचनात्मक दृष्टि (विकासवाद)।
2. सांस्कृतिक-निरन्तरता की दृष्टि।

#### 16. निष्कर्ष -

वैदिक अर्चना-परम्परा और वास्तु-विज्ञान भारतीय संस्कृति के दो परस्पर सम्बद्ध आयाम हैं। यज्ञीय वेदी की ज्यामिति, दिशानुशासन और ब्रह्माण्डीय प्रतीकवाद ने आगे चलकर मंदिर स्थापत्य का रूप लिया। वेदों और ब्राह्मण ग्रंथों में वर्णित सिद्धान्तों ने न केवल धार्मिक जीवन को, बल्कि गणित, स्थापत्य और सामाजिक संरचना को भी प्रभावित किया।

अतः यह कहा जा सकता है कि वैदिक अर्चना और वास्तु-विज्ञान भारतीय सांस्कृतिक विकास की मूलधारा हैं, जिनका प्रभाव आज भी मंदिर-निर्माण और धार्मिक आचार में विद्यमान है। वैदिककालीन अर्चना-परम्परा और वास्तु-विज्ञान भारतीय सांस्कृतिक इतिहास के दो परस्पर सम्बद्ध स्तम्भ हैं। यज्ञीय वेदी के मापन, दिशा-विन्यास और प्रतीकवाद ने आगे चलकर मंदिर स्थापत्य को आकार दिया। अतः वैदिक अर्चना केवल धार्मिक परम्परा नहीं, बल्कि वैज्ञानिक, गणितीय और दार्शनिक चिंतन की आधारशिला थी।

#### संदर्भ-सूची

1. ऋग्वेद
2. यजुर्वेद
3. सामवेद
4. अथर्ववेद
5. शतपथ ब्राह्मण
6. तैत्तिरीय संहिता
7. बौधायन शुल्बसूत्र
8. मत्स्य पुराण
9. अग्नि पुराण
10. मयमतम्
11. विश्वकर्मा वास्तुशास्त्र